Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

परम्परा से परे : डिजिटल भारत में महिलाओं द्वारा शहरी क्षेत्रों में वैवाहिक विकल्पों का सशक्तिकरण

Dr. Sonia Dabas
Associate Professor, Department of Political Science, Delhi University
Arti Jha
Business Analyst Testbook, Skill Academy

Article Info
Volume 6, Issue 6
Page Number : 193-199

Publication Issue :
November-December-2023

Article History
Accepted : 10 Nov 2023
Published : 30 Nov 2023

शोधसारांश– यह लेख भारतीय महिलाओं के बीच शहरी क्षेत्रों में विवाह पर विकसित दृष्टिकोण की पड़ताल करता है। सामाजिक अपेक्षा और पारिवारिक स्थिरता की आधारशिला के रूप में देखे जाने पर, भारत में महिलाओं के लिए विवाह संस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। शैक्षिक, आर्थिक स्वतंत्रता, बदलती लैंगिक गतिशीलता और कानूनी सुधारों जैसे कारकों ने महिलाओं को विवाह पर व्यक्तिगत विकास और कैरियर की आकांक्षाओं को प्राथमिकता देने के लिए सशक्त किया है। ये बदलाव व्यक्तिगत स्वायत्तता, लैंगिक समानता और व्यक्तिगत पूर्ति की खोज की दिशा में व्यापक सामाजिक परिवर्तनों को दर्शाते हैं। लेख इन प्रवृत्तियों की जांच करता है तथा इस बात पर प्रकाश भी डालता है कि उन्होंने समकालीन भारतीय समाज में संबंधों और पारिवारिक संरचनाओं को कैसे नया रूप दिया है।

मुख्यशब्द : विवाह, भारतीय महिलाएं, सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक गतिशीलता, शिक्षा।

परिचय–समकालीन भारत में, सामाजिक मानदंडों को बदलने और लैंगिक भूमिकाओं को विकसित करने से विवाह का परिदृश्य एक गहन परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। परंपरागत रूप से, विवाह का असीम सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व रहा है, विशेष रूप से महिलाओं के लिए। हाल के दशकों में महिलाओं के लिए शिक्षा और आर्थिक अवसरों में वृद्धि के कारण अधिक से अधिक लैंगिक समानता की ओर बदलाव के रूप में देखा गया है। नतीजतन, कई महिलाएं शादी में देरी करने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने और करियर स्थापित

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

करने का विकल्प चुन रही हैं, पारंपरिक प्रथा को चुनौती दे रही हैं जो शादी को महिला उपलब्धि के शिखर के रूप में रखती है। यह सांस्कृतिक विकास व्यक्तिगत स्वायत्तता और व्यक्तिगत पूर्ति की दिशा में एक व्यापक आंदोलन का प्रतीक है, जहां महिलाएं अपनी स्वतंत्रता का दावा कर रही हैं और पारंपरिक घरेलू अपेक्षाओं से परे अपनी भूमिकाओं को फिर से परिभाषित कर रही हैं। नतीजतन, भारत में महिला विवाह में गिरावट न केवल बदलते सामाजिक मूल्यों को दर्शाती है, बल्कि व्यक्तिगत आकांक्षाओं और महत्वाकांक्षाओं के आधार पर अपने रास्ते बनाने के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण को भी दर्शाती है।

हाल ही के दशकों में, भारत ने विवाह की संस्था में, विशेष रूप से महिलाओं के बीच, एक गहरा विकास देखा है। परंपरागत रूप से सामाजिक मानदंडों और पारिवारिक अपेक्षाओं की आधारशिला मानी जाने वाली भारतीय महिलाओं के लिए विवाह दर में 2000 के दशक की शुरुआत से परिवर्तनकारी बदलाव आया है। इस बदलाव की विशेषता उल्लेखनीय प्रवृत्ति है जहां कई महिलाएं शिक्षा, करियर और व्यक्तिगत विकास को प्राथमिकता देने के लिए शादी में देरी या पूरी तरह से त्याग करने का विकल्प चुन रही हैं। विकसित धारणाओं द्वारा ऐसे समाज में जहाँ विवाह को पारंपरिक रूप से सामाजिक संरचना और पारिवारिक स्थिरता की आधारशिला के रूप में देखा जाता है, कुछ भारतीय महिलाओं द्वारा विवाह न करने का निर्णय कुछ लोगों को अपरंपरागत या विवादास्पद भी लग सकता है। हालाँकि, यह उभरता हुआ रुझान आधुनिक भारतीय महिलाओं के बीच दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं में व्यापक बदलाव को दर्शाता है, जो बदलते सामाजिक गतिशीलता, आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत है।

अपनी करियर तथा स्वात्न्त्र्य के चुनाव के समक्ष कई बार देरी से विवाह एवं संतानोत्पत्ति ना करने का निर्णय भी स्त्रियाँ कर रही हैं। निस्संदेह यह एक अत्यंत क्रांतिकारी निर्णय है जिसे कई बार चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा है। किंतु यह एक अत्यंत निजी एवम व्यक्तिगत सोच है, जिस पर सामाजिक दबाव नहीं होना चाहिए ।

सांस्कृतिक प्रतिमानों और शिक्षा में बदलावः

ऐतिहासिक रूप से, भारत में विवाह सांस्कृतिक और पारिवारिक अपेक्षाओं में गहराई से निहित था, जिसे अक्सर महिलाओं के लिए एक आवश्यक संस्कार के रूप में देखा जाता था। हालाँकि, जैसे–जैसे वैश्वीकरण ने विविध सांस्कृतिक मानदंडों और मूल्यों के संपर्क में वृद्धि की है, युवा पीढ़ियों ने इन पारंपरिक अपेक्षाओं पर सवाल उठाना और उन्हें फिर से परिभाषित करना शुरू कर दिया है (Desai, 2011). इसके अलावा, शैक्षिक अवसरों के विस्तार ने महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच ने महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने और पुरुषों के प्रभुत्व वाले व्यावसायिक

क्षेत्रों में प्रवेश करने में सक्षम बनाया है। इस शैक्षिक सशक्तिकरण ने महिलाओं के क्षितिज को व्यापक बनाया है, विवाह और पारंपरिक लिंग भूमिकाओं से परे आकांक्षाओं को बढ़ावा दिया है (Gangoli, 2009). भारत, कई अन्य देशों की तरह, सामाजिक मानदंडों और लैंगिक भूमिकाओं में धीरे–धीरे लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव का अनुभव कर रहा है। लैंगिक समानता और व्यक्तिगत अधिकारों के महत्व की बढ़ती मान्यता ने कई महिलाओं को पारंपरिक लैंगिक मानदंडों पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया है जो विवाह को प्राथमिक लक्ष्य के रूप में निर्धारित करते हैं।

महिलाएँ तेजी से रूढ़ियों और अपेक्षाओं को चुनौती दे रही हैं जो उनके विकल्पों और अवसरों को सीमित करती हैं। वे भारतीय समाज में एक महिला होने का अर्थ फिर से परिभाषित कर रही हैं, ऐसे रिश्ते और साझेदारी की तलाश कर रही हैं, जो विवाह के भीतर पारंपरिक भूमिकाओं के अनुरूप होने के बजाय आपसी सम्मान, समानता और साझा मूल्यों पर आधारित हों।

आर्थिक स्वतंत्रता और बदलती प्राथमिकताएं:

भारतीय महिलाओं के बीच विवाह दर में गिरावट लाने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण कारक आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति है। पिछली पीढ़ियों के विपरीत जहां पतियों पर वित्तीय निर्भरता आम थी, आज कई महिलाएं वित्तीय स्वायत्तता और कैरियर की उन्नति को प्राथमिकता देती हैं। आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं को स्वतंत्र रूप से जीवन चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करती है, जिसमें विवाह के समय और व्यक्तिगत विकास के बारे में निर्णय शामिल हैं। (Kabeer, 2008). यह बदलाव व्यक्तिगत स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता की दिशा में एक व्यापक सामाजिक प्रवृत्ति को दर्शाता है। कई भारतीय महिलाओं के विवाह को स्थगित करने या अस्वीकार करने के निर्णय को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक कैरियर की आकांक्षाओं और आर्थिक स्वतंत्रता की खोज है। पिछले कुछ दशकों में, भारत में महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जैसे–जैसे अधिक महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं और कार्यबल में प्रवेश करती हैं, वे विवाह और पारिवारिक जीवन की पारंपरिक अपेक्षाओं पर अपने करियर और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को प्राथमिकता दे रही हैं।

अपने आप को आर्थिक रूप से सहारा देने की क्षमता महिलाओं को सशक्तीकरण और स्वायत्तता की भावना प्रदान करती है जो पिछली पीढ़ियों में इतनी आसानी से सुलभ नहीं हो सकती थी। यह आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं को सामाजिक अपेक्षाओं या जीवनसाथी पर आर्थिक निर्भरता से बंधे रहने के बजाय अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं के आधार पर निर्णय लेने की अनुमति देती है।

लैंगिक गतिशीलता और कानूनी सुधार : लग भूमिकाओं और अपेक्षाओं के प्रति विकसित सामाजिक दृष्टिकोण ने एक ऐसे बदलाव में योगदान दिया है जहां विवाह को सामाजिक दायित्व के बजाय व्यक्तिगत पसंद के रूप में देखा जाता है।

संबंधों और पारिवारिक संरचनाओं के भीतर विकसित होने वाली गतिशीलता ने भी विवाह के निर्णयों को प्रभावित किया है। समतावादी मूल्यों के बढ़ते संपर्क और बदलती लिंग भूमिकाओं के साथ, महिलाएं केवल पारंपरिक भूमिकाओं को पूरा करने के बजाय आपसी सम्मान और साझा आकांक्षाओं के आधार पर साझेदारी की तलाश करती हैं (Visaria, 2012).

इसके अलावा, दहेज, घरेलू हिंसा और लैंगिक भेदभाव जैसे मुद्दों का मुकाबला करने के उद्देश्य से कानूनी सुधारों ने महिलाओं को अपने अधिकारों का दावा करने और पुरानी विवाह प्रथाओं के अनुरूप सामाजिक दबावों का विरोध करने के लिए सशक्त किया है (Pillai & Anand, 2017). महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के उद्देश्य से कानूनी सुधार, महिलाओं को अपनी स्वतंत्रता का दावा करने और विवाह में देरी करने के लिए सशक्त किया है जब तक कि वे एक उपयुक्त साथी नहीं ढूंढ लेती हैं, घर बसाने के लिए तैयार नहीं होती हैं।

विवाह की कानूनी आयु में वृद्धि (वर्तमान में भारत में महिलाओं के लिए 18 और पुरुषों के लिए 21) ने बाल–विवाह को हतोत्साहित किया है और स्त्रियों को विवाह करने से पहले शिक्षा और व्यक्तिगत विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

चुनौतियां : भारतीय समाज में व्यक्तिगत आकांक्षाओं के लिए यदि महिलाएं विवाह न करने या देरी से करने का निर्णय लेती है तो उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

1.सामाजिक अपमानः महिलाओं के लिए कम उम्र में शादी करने के लिए अभी भी महत्वपूर्ण सामाजिक दबाव है। जो महिलाएं शादी में देरी करती हैं या शादी नहीं करने का विकल्प चुनती हैं, उन्हें सामाजिक अनादर, आलोचना और उनकी पसंद पर सवाल उठाने का सामना करना पड़ सकता है।

2.पारिवारिक अपेक्षाएँः विवाह के संबंध में परिवारों की अक्सर पारंपरिक अपेक्षाएँ होती हैं, जिनमें पारिवारिक प्रतिष्ठा, सामाजिक स्वीकृति और विवाह करने और परिवार शुरू करने के लिए बेटियों के कथित कर्तव्य के बारे में चिंताएँ शामिल हैं।

3.करियर त्यागः शादी में देरी या शादी न करने का चुनाव करने का मतलब कभी–कभी शिक्षा और करियर की उन्नति को प्राथमिकता देना हो सकता है। हालाँकि, महिलाओं को सामाजिक अपेक्षाओं और पारिवारिक दबावों के साथ कैरियर की आकांक्षाओं को संतुलित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

4.वित्तीय स्वतंत्रताः महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, खासकर अगर वे शादी नहीं करना चाहती हैं। यदि उनके पास पर्याप्त आर्थिक समर्थन नहीं है या सामाजिक मानदंड अविवाहित महिलाओं के लिए वित्तीय स्थिरता प्राप्त करना मुश्किल बनाते हैं तो वित्तीय चुनौतियां उत्पन्न हो सकती हैं

5.सामाजिक अलगावः जो महिलाएं विवाह के संबंध में सामाजिक मानदंडों का पालन नहीं करती हैं, वे सामाजिक अलगाव या बहिष्कार का अनुभव कर सकती हैं, क्योंकि सामाजिक बातचीत और समर्थन नेटवर्क अक्सर विवाहित जीवन और परिवार के आसपास केंद्रित होते हैं।

6.सुरक्षा संबंधी चिंताएंः भारत जैसे पितृसत्तात्मक समाज में, अविवाहित महिलाओं को अधिक असुरक्षित माना जा सकता है या उन्हें व्यक्तिगत सुरक्षा से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

7.अनुरूप होने का दबावः महिलाओं पर सामाजिक अपेक्षाओं और मानदंडों के अनुरूप होने का दबाव है। शादी में देरी करने या अकेले रहने का विकल्प चुनना इन मानदंडों को चुनौती देता है और बड़े पैमाने पर परिवार, दोस्तों और समाज से प्रतिरोध का कारण बन सकता है।

इन बदलते दृष्टिकोणों के बावजूद, भारतीय समाज अभी भी उन महिलाओं के लिए चुनौतियाँ और सामाजिक धारणाएँ पेश कर सकता है जो शादी नहीं करना चुनती हैं। परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों या यहाँ तक कि दोस्तों से भी शादी और मातृत्व की पारंपरिक अपेक्षाओं के अनुरूप होने का दबाव हो सकता है। अविवाहित रहने वाली महिलाओं को निंदा या जाँच का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि उनके विकल्पों को कभी–कभी अपरंपरागत या स्थापित मानदंडों के लिए ख़तरा माना जा सकता है।

इन चुनौतियों के बावजूद, दृष्टिकोण धीरे–धीरे विकसित हो रहे हैं, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में और युवा पीढ़ियों के बीच। बढ़ते शैक्षिक अवसर, आर्थिक सशक्तिकरण और बदलते सामाजिक दृष्टिकोण धीरे–धीरे उन महिलाओं के लिए अधिक समर्थन और स्वीकृति प्रदान कर रहे हैं जो भारत में विवाह के लिए वैकल्पिक मार्ग चुनती हैं।

हालाँकि, जैसे–जैसे अधिक महिलाएँ अपनी स्वतंत्रता का दावा करती हैं और इन मानदंडों को चुनौती देती हैं, वैसे–वैसे पूर्णता और स्वतंत्रता के लिए विविध रास्तों की स्वीकृति और मान्यता बढ़ती जा रही है। शादी न करने के निर्णय को एक वैध और सशक्त विकल्प के रूप में देखा जा रहा है जो व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और आकांक्षाओं को दर्शाता है।

निष्कर्ष :– कुछ भारतीय महिलाओं के लिए, विवाह न करने का निर्णय व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता को प्राथमिकता देने का एक सचेत विकल्प है। ऐतिहासिक रूप से, विवाह अक्सर कुछ सामाजिक दायित्वों और जिम्मेदारियों से जुड़ा होता है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रतिबंधित कर सकते हैं। अविवाहित रहकर,

महिलाएँ विवाह के लिए आवश्यक समझौतों के बिना अपने जीवन, करियर और रिश्तों के बारे में स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता बनाए रखती हैं।

यह विकल्प व्यक्तिगत खुशी और संतुष्टि को महत्व देने की दिशा में एक व्यापक सांस्कृतिक बदलाव को भी दर्शाता है। भारतीय महिलाएँ अपनी शर्तों पर जीवन जीने के अपने अधिकार का तेज़ी से दावा कर रही हैं, चाहे इसमें रचनात्मक जुनून का पीछा करना, यात्रा करना या सामाजिक और राजनीतिक सक्रियता में शामिल होना शामिल हो।

युवा पीढ़ियों के बीच बदलती जीवन शैली और प्राथमिकताओं ने विवाह के निर्णयों को और आकार दिया है। कई महिलाएं कम उम्र में विवाह की जिम्मेदारियों के बजाय व्यक्तिगत विकास, यात्रा और स्वतंत्रता को प्राथमिकता देती हैं। एक साथी के साथ भावनात्मक और बौद्धिक अनुकूलता पर जोर देना सर्वोपरि हो गया है, जिससे विवाह के प्रति अधिक चयनात्मक दृष्टिकोण सामने आया है। (Chandiramani, 2010).

अंत में, 2000 के दशक के बाद से भारतीय महिलाओं के बीच घटती विवाह दर सामाजिक मूल्यों और महिलाओं की भूमिकाओं में व्यापक परिवर्तन का संकेत देती है। यह बदलाव व्यक्तिगत आकांक्षाओं और प्राथमिकताओं के अनुसार अपने जीवन को आकार देने में महिलाओं की बढ़ती इच्छा को रेखांकित करता है, जो अधिक से अधिक व्यक्तिगत स्वायत्तता, लैंगिक समानता और व्यक्तिगत पूर्ति की दिशा में एक कदम को दर्शाता है। जैसे–जैसे भारत आर्थिक और सामाजिक रूप से प्रगति कर रहा है, इन प्रवृत्तियों के विकसित होने की संभावना है, जिससे आने वाले वर्षों में संबंधों और पारिवारिक संरचनाओं के नए प्रतिमानों का मार्ग प्रशस्त होगा। कुछ भारतीय महिलाओं का विवाह न करने का निर्णय सामाजिक दृष्टिकोण और मूल्यों में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। यह पारंपरिक भूमिकाओं से परे महिलाओं के अधिकारों, स्वायत्तता और व्यक्तिगत पूर्णता की बढ़ती मान्यता को दर्शाता है। जैसे–जैसे भारतीय समाज विकसित होता जा रहा है, कई पुरानी सामाजिक प्रथाओं में धीरे–धीरे परिवर्तन आ रहा है। जिसमें शादी न करने का विकल्प भी शामिल है। अंततः, यह विकसित हो रही नई प्रथा अधिक समावेशी और सशक्त समाज में योगदान देती है जहाँ महिलाएँ अपना जीवन प्रामाणिक रूप से और अपनी शर्तों पर जी सकती हैं। लेकिन भारतीय समाज में विवाह चिरकाल से एक अति महत्वपूर्ण संस्था रही है, जिसे समाप्त नही किया जा सकता, लेकिन समय में परिवर्तन के साथ विवाह को निर्भरता का साधन न रहकर एक समान साझेदारी के रूप में विकसित करने की आवश्यकता से इंकार भी नहीं किया जा सकता है।

References

1. Desai, S. (2011). Gender inequality in education and employment in India. In A. Basu & C. Datta (Eds.), Globalization, poverty, and inequality: Evidence from India (pp. 55-81). Cambridge University Press.
2. Gangoli, G. (2009). Rethinking women's rights and development in India. Women's Studies International Forum, 32(3), 192-200.
3. Kabeer, N. (2008). Globalization, labor standards, and women's rights: Dilemmas of collective (in)action in an interdependent world. Feminist Economics, 14(1), 1-28.
4. Visaria, L. (2012). Gender perspectives on demographic change in India. Asia-Pacific Population Journal, 27(2), 87-104.
5. Pillai, P., & Anand, P. (2017). Domestic violence against women in India: A systematic review of a decade of quantitative studies. Global Public Health, 12(4), 498-513.
6. Chandiramani, R. (2010). Marriage and family in India: A paradigm shift? Journal of Comparative Family Studies, 41(2), 155-166.